ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

Research Paper

कवि चंद्रसेन 'विराट' के ग़ज़ल–गीत में राष्ट्रीय भावना

शौकतअली अजमुद्दीन सय्यदे
असो. प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
आर्टस, कॉमर्स कॉलेज मायणी
तह. खटाव, जिला –सातारा
महाराष्ट्र. पिन. नं. 415102

प्रस्तावना :–

कवि चंद्रसेन 'विराट' के काव्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक चिंतन के साथ साथ राष्ट्रीय चिंतन की सशक्त अभिव्यक्ति हुई हैं। इनके व्दारा लिखित अनेक ग़ज़ल–संग्रह, गीत–संग्रह, मुक्तक काव्य तथा दोहा–संग्रह कवि की प्रखर देशभक्ति और सामाजिक जागरुकता के परिचायक हैं। इनके ग़ज़ल, दोहा और गीतों में कहीं देश और देश प्रेम को पुष्ट करनेवाले तत्वों के प्रति श्रध्दा विज्ञापित हुई है, तो कहीं समसामयिक सामाजिक समस्याओं के समाधान उदार दृश्टि से राष्ट्रीय भावों में दर्शाये गये हैं। तो कहीं राष्ट्रीय एकता और सामंजस्य का विकसित भाव सामाजिक समस्याओं का समाधान है, यह दर्शाया गया है। राष्ट्र रक्षा के लिए जब तक राष्ट्रीय चेतना के सुदृढ कवच की आवश्यकता होगी उस समय तक कवि 'विराट' के राष्ट्रीय गीत एवं ग़ज़लों की प्रासंगिकता और उपयोगिता बनी रहेगी।

एकता, आपसी प्रेमभावना से मिलजुलकर रहने का देशवासियों का संकल्प राष्ट्रीय चेतना का द्योतक है। राष्ट्र की एकता और अखण्डता बनी रहें, राष्ट्र संपन्न बने, राष्ट्र की मिट्टी का, राष्ट्र की संस्कृति का स्वाभिमान मन में बने रहें यही उदात्त भावना राष्ट्रीय भावना हैं। डॉ. शुभलक्ष्मी ने राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''राष्ट्रीयता एक मनोभाव है। श्रद्धा एवं भक्ति से पूर्ण एक आदर्श है, जिसका आलम्बन राष्ट्र होता है। प्रत्येक दृष्टि से राष्ट्र संपन्न देखने और बनाने की भावना ही राष्ट्रीयता का मूल आधार हैं। अपनी जन्मभूमी से अनुराग, प्राचीन परंपराओं के प्रति आस्था, अपने देश के प्रत्येक पदार्थ, प्राणी एवं प्राकृतिक सुशमा के प्रति ममत्व की भावना और अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के प्रति प्रगाढ आदर मानव के अंतर मे विद्यमान राष्ट्रप्रेम का द्योतक है।''1 यह राष्ट्रप्रेम ही उदात्त राष्ट्रीय भावना है। राष्ट्रीय भावना से प्रेरीत होकर सारे भारतवासियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से मुकाबला किया। अंग्रेजो की गुलामी से भारत आजाद हो गया। लेकिन आजादी के बाद देश में अनेक समस्याएँ निर्माण हुअी। भाषावाद, सीमावाद, अलगाववाद, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नक्षलवाद आदि। हमारे देश की एकता और अखण्डता खतरे में पड गयी। लोग संकुचित विचारो के बने। हर एक आदमी पहले अपना, अपने धर्म का, अपनी जाति का, अपने प्रांत का विचार करने लगा, देश की एकता, अखंडता के विचारोंसे वह कोसों दूर रहने लगा, अतः देश के लोगों में राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई देने लगा। 1950–60 के बाद ये समस्याएँ तीव्र रुप मे उठ खडी हुअी। जिस देश में राष्ट्रीय एकता नहीं है, उस देश की उन्नती रुक जाती है। अतः इस समस्या का हल करने के लिए साठोत्तरी हिंदी कवियों ने देश में राष्ट्रीय एकता तथा सामंजस्य की जागृति लाने का महान कार्य किया।

कवि चंद्रसेन 'विराट' राष्ट्रीय ख्याती–प्राप्त ग़ज़लकार, गीतकार, मुक्तककार तथा दोहा–रचयिता है। इनके अब तक 10 ग़ज़ल संग्रह, 12 गीत–संग्रह तथा दो दोहा–संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इन्हें कई सम्मान तथा पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। हिंदी के साठोत्तरी कवियों में चंद्रसेन 'विराट' का नाम अग्रगण्य है। कवि चंद्रसेन 'विराट' राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरुक कवि हैं। वे जानते हैं कि राष्ट्रीय कष्टों का एक बडा कारण राष्ट्रीय एकता का अभाव है। संपूर्ण भारत न केवल विभिन्न प्रांतो मे विभक्त है, अपितु भाषा, प्रांत, क्षेत्र, धर्म आदि में भी विभाजित है। इसका लाभ राजनीतिक समाजकंटकों ने लिया है। वे प्रांतवाद, भाषावाद, धर्मवाद के नाम पर राष्ट्रीय एकता को खतरा पहुँचाते हैं। कवि 'विराट' राष्ट्रीय सुरक्षा और सुखसंवर्धन के लिए राष्ट्रीय एकता की पुष्टी के लिए प्रेरीत करते है। उनका स्पष्ट उद्घोष है कि –

''सबसे पहले देश हमारा
सबसे पहले देश
संकट काल मे देश से बढकर
कोई नही विशेष
हम पंजाबी हम बंगाली हम ही राजस्थानी है
जो भी हो हम बाद में लेकिन पहले हिंदुस्तानी है।''2

वतन के पहरेदारें से, हम सब हिंदुस्तानी हैं, आंधी हो या तुफान आदि बहुत सी रचनाओं में राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया गया हैं। कवि भारतवासियों को स्मरण कराता हैं –

''अलग हो चाहे देश एक हृदय है भारतीय हम
भूल हमारे मतभेदों को मिलकर एक इकाई हम
अलग प्रांत है अलग बोलियॉ फिर भी एक इकाई हम।''3

कवि 'मानवता' का उपदेश देते हुए लिखते है –

'' मंदिर, मसजिद है गुरुव्दारे
गिरजे है या शिवाले है,
सबका मजहब हैं मानवता
सब के सब भारतवाले है।''4

अतः विराट उद्बोधन करते हैं कि हम सब पहले भारतीय हैं। हमारा मजहब मानवता है। 'हम सब एक हैं' का नारा हमें भारतीयों के लिए बुलंद करना होगा।

भारत वर्ष को यदि संपन्न और खुशहाल बनाना है, तो देश में एक ऐसा मजहब चलाना जरुरी है, जिसमें इन्सान को इन्सान बनाने की बात हो। इसलिए तो कवि नीरज ने लिखा हैं–

''अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाये,
जिस में इन्सान को इन्सान बनाया जाये
जिसकी खुशबू से महक जाये पडोसी का भी घर
फूल इस किस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।''5

लेकिन आज हम देखते है कुछ राजनीतिक समाजकंटको ने अपने लाभ के लिए लोगों मे नफरत की दीवार खडी कर दी हैं। वे आज दंगे–फसाद भडकाते है। परिणामतः आज इस देश में पुनः कबीरवाणी की आवश्यकता महमूस होने लगी है। इसलिए तो एकता की अभिलाशा व्यक्त करते हुए कवि 'विराट' लिखते है –

''जो न हो मैली धुएँ से उस किरण की खोज है
दृष्टि दूषित हो न जिसकी उस नयन की खोज है
भिन्न प्रांतो, धर्म, भाषा, जातियों में एक था
है कहाँ मेरा वतन?मुझको वतन की खोज है।''6

अतः कवि 'विराट' जी ने धार्मिक सद्भाव की मनोकामना व्यक्त करते हुए 'भारत विविधता में एकतावाला वतन' बने इसि उदात्त राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त किया है।

इसलिए तो कृत्रिमता से लिपटे–सिमटे आज के यंत्रवत मानव को आपसी भाईचारे और प्रेम का संदेश देते हुए कवि 'विराट' लिखते है–

''मिले तो मत मन मारे मिल
खुल कर बाह पसारे मिल
वर्ण,वर्ग, कुल, जाति, धरम
भेद भुलाकर सारे मिल।''7

अतः स्पष्ट है कुल, जाति, धरम की दीवारें तोडकर इन्सानियत को अपनाकर एकता की डोर में बंधे रहने का उदात्त संदेश हम भारतवासियों को दिया है, प्रकारांत से यहाँ कवि की उदात्त राष्ट्रीय चेतना व्यक्त हुई हैं। इनके गीतो में सर्वधर्मसमभाव यह राष्टीय मूल्य है, देशभक्ति का गौरवगान है, राष्ट्रभक्ति के, समर्पण के और भक्ति के रंग है। कवि 'विराट' जी ने अपने गीतों में देशप्रेम देशभक्ती का गौरवान किया है। वे गाते है –

Please cite this Article as : ***शौकतअली अजमुद्दीन सय्यदे*** **,** ***कवि चंद्रसेन 'विराट' के ग़ज़ल–गीत में राष्ट्रीय भावना*** **: Golden Research Thoughts (March ; 2012)**

Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

''हो जन्म दुबारा भारत वतन मिलें
धरती यही मिलें फिर फिर यह गगन मिलें
होकर शहीद इस पे हमारे शरीर को
फिर तीन रंग वाले ध्वज का कफन मिलें
हो जन्म दुबारा भारत वतन मिलें।''8

अतः कवि 'विराट' का विचार है कि हर भारतवासियों के मन में निस्वार्थ देशप्रेम होना चाहिए। देश के लिए त्याग तथा आत्मसमर्पन करना चाहिए। हमें देश ने क्या दिया है इसकी अपेक्षा हम देश के लिए क्या करते है, यह हमेशा सोचना चाहिए। कवि 'विराट' इस संबंध में लिखते है–

''दिया देश ने क्या हमें, पुछो यह न सवाल,
तुम क्या लौटा सके, हसका करो खयाल।''9

अतः स्पष्ट है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश से प्यार होना चाहिए। देशहित के लिए भारतवासियों में एकता होनी चाहिए। इसलिए तो ग़ज़लकार इशराक बिलरामी लिखते है –

''हमारी एकता का विश्व मे ऐलान हो जाये
नजर जिस मुल्क पे जाए वो हिंदुस्तान हो जाये
वतन को अपने हर एक शख्स को प्यार–मोहब्बत हो
हमारा आपका सबका यही इमान हो जाये।''10

इसलिए तो कवि 'विराट' को यह देश अपने प्राणों से भी प्यारा लगता है। वे गाते है –

''मेरा देश महान
प्राणों से भी प्यारा मुझको
मेरा हिंदुस्तान।''11

उन्हें देश की मिट्टी (भूमि) देश का आम आदमी, देश की संस्कृति से प्रगाढ प्रेम है। ये तत्व ही उनकी राष्ट्रीय चेतना के अनिवार्य अंग है। देश की मिट्टी के समक्ष वे स्वर्ग की संपदा को भी हेय समझते है–

''इसी मिट्टी में मिलूँ राम करे
फूल बन बन के खिलूँ राम करे
स्वर्ग का दो न मुझे लालच तुम,
स्वर्ग मिल जाय न लूँ राम करे।''12

इस तरह कवि मातृभूमि को स्वर्ग से भी बढकर मानते हैं। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी' अर्थात 'माता और मातृभूमि' का स्थान हमारे जीवन में स्वर्ग से भी बढकर है यह राष्ट्रीय भावना 'विराट' जी के काव्य में हमें देखने मिलती है। मातृवंदना इस गीत में हमें उनकी उदात्त राष्ट्रीय भावना का परिचय देखने मिलता है–

''वसुन्धरा ये वसुन्धरा
धर्म धैर्य धृति – धुरन्धरा
प्रणम्य भारत वसुन्धरा
ममता लुटाती ये मातृरुपा
इसकी छटा है स्वर्गिक अनूपा
दिव्याधरा से दिव्याधरा
सुरम्य स्नेहिल अभ्यन्तरा
प्रणम्य भारत वसुन्धरा ....।''13

अतः स्वर्ग से भी सुंदर सुरम्य भारत भूमि को कवि 'विराट' जी अत्यंत भावनाशील होकर प्रणाम करते है। सुंदर, सुरम्य सुसंस्कृत, ऐतिहासिक गौरवशाली भारतभूमिका वर्णन करते हुए कवि लिखते है–

''हो धूल इसकी चंदन, अमृत है इसका जल
है झूमती हवाओं में मोतिया फसल,
ममता भरी ये गोदिया फिर नसीब हो'
इतिहास का वो गौरव, वह आन बान हो
बलिदान की प्रथाएँ, रण का विधान हो
अंतिम समय अधरपर जयहिंद का वचन हेा।''14

यहाँ कवि के अंतर में राष्ट्र संपन्न रुप में देखने की भावना दिखाई देती है। प्राचीन परंपराओं के प्रति आस्था तथा अपनी संस्कृति के प्रति प्रगाढ आदर दिखाई देता है, जो राष्ट्रभूमि अनुराग का द्योतक है। कवि का राष्ट्रभूमि अनुराग विदेशी शत्रुओं से देश की रक्षा के संदर्भ में भी प्रकट हुआ है। उनकी अधिकांश रचनाओं में देश की रक्षा के लिए शत्रुओं का डटकर मुकाबला करने का संदेश दिया गया है। 'अपने वतन का कर्ज' शीर्षक गीत की निम्नलिखित काव्यपंक्तियाँ इस संदर्भ में उध्द्रणीय हैं–

''बढ के सपूत देश के शेरों से दहाडो
जो हाथ उठ रहा है, वह हाथ उखाडो
सदियों न उठे दुश्मन इस तरह पछाडो
फिर रक्त में दुश्मन के नहाने का समय है।''15

इस तरह 'विराट' जी का काव्य देशभक्ति के भाव से प्रेरित है। अतः कवि देश के लिए बलिदान और त्याग करनेवाले देवताओं के गीत गाते हुए आम भारतियों को देश के लिए बलिदान करने की प्रेरणा देते है–

''हम अपना खुन छिडके
मिट्टी गुलाल कर दे
जो दीप उसने बाला
उसको मशाल कर दे।''16

इनके गीत–संग्रह, ग़ज़ल–संग्रह, मुक्तक तथा दोहा–संग्रह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। ये वतन मेरा वतन, मिल जुल के काम करो, यौवन हिंदुस्तान का, सो मत जाना मेरे देश, उठ रहा है देश मेरा, गणतंत्र वंदना, अपने वतन का कर्ज, अभियान गीत हम सब हिंदुस्तानी है, भारत स्वर्ग बनायेंगे, आँधी हो या तूफान, जय जय राष्ट्र महान, भारत अपना देश, वतन के पहरेदारों से, राष्ट्रवंदना कोई दिप नया आदि सभी गीत राष्ट्रीय भावनाओं को व्यंजित करते हैं। इन गीतों मे निर्माण के स्वर भरे पडे है।

'विराट' के राष्ट्रीय गीतों के बारे में राजगोपाल परदेशी लिखते है– '' कवि 'विराट' के राष्ट्रीय गीत देश को समर्पित वे श्रध्दा सुमन है जिनमें उसके कवि की निष्ठा की गंध है। देश के युवा पसीने को उसने सलाम भेजे हैं, नये खून को अभिनंदन–पत्र लिखें है।''17

अतः स्पष्ट है–'विराट' जीने अपने काव्य सुमनों व्दारा देश के युवकों को राष्ट्रीय एकता का महान संदेश दिया है। वास्तव में यदि राष्ट्रीय एकता का भाव हम नवयुवकों में विकसित हो जाय तो हम बहुत सी समस्याओं से मुक्ति पा सकते है। देश को महान बना सकते है।

निष्कर्श :

अतः स्पष्ट है कवि 'विराट' के ग़ज़ल तथा गीति काव्य में जो राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखरित हुआ है, वह अत्यंत उद्‌बोधक है। उनके काव्य में राष्ट्रीय एकता और सामांजस्य के भावों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से एकता और सामंजस्य के महत्व पर प्रकाश डाला है। उन्होंने यह समझाने की कोशिश की है कि देश के विकास हेतु एकता जरुरी है। प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्र भावना अत्यंत आवश्यक है। धर्म और जाति से बढकर राष्ट्रहित होता है। इस तरह कवि 'विराट' के काव्य में राष्ट्रीय एकता और सामंजस्य के भाव मुखरित हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना ले.डॉ.शुभलक्ष्मी., अमन प्रकाशन कानपुर, 1984 पष्ट.11
2. मिट्टी मेरे देश की (गीत–संग्रह), कवि 'विराट' प्रगती प्रकाशन आग्रा, 1975 पृ.37
3. मिट्टी मेरे देश की (गीत संग्रह), कवि 'विराट' प्रगती प्रकाशन आगरा, पृ. 37
4. स्वर के सोपान (गीत–संग्रह), चंद्रसेन 'विराट' साहित्य भारती प्रकाशन, मंबई, 1996 पृ. 04
5. कॉरवा गुजर गया (ग़ज़ल–संग्रह) कवि 'नीरज', हिंद पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 1991. पृ. 07
6. आस्था के अमलतास (ग़ज़ल–संग्रह), कवि 'विराट' इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, 1980 पृ. 60
7. इस सदी का आदमी (ग़ज़ल–संग्रह), कवि 'विराट' दिशा प्रकाशन, दिल्ली, 1997, पृ 17
8. मिट्टी मेरे देश की (गीत–संग्रह) कवि 'विराट' प्रगति प्रकाशन आगरा, 1975, पृ 56
9. 'चुटकी चुटकी चांदणी', दोहा संग्रह, कवि 'विराट', दिशा प्रकाशन दिल्ली 2009 पृ 56
10. निर्झर (हिंदी ग़ज़ल विशेषांक), आश्वस्त प्रकाशन उज्जैन, ई सन 1992. संपा. अखिलेश सक्सेना पृ. 32
11. मिट्टी मेरे देश की (गीत संग्रह) कवि 'विराट' प्रगती पकाशन आगरा 1975 पृ. 52
12. 'कुछ छाया कुछ धूप' (मुक्तक–संग्रह), कवि विराट, लोकवाणी, संस्थान दिल्ली, 1998 पृ 123.
13. 'सन्नाटे की चीख' (गीत–संग्रह), चंद्रसेन 'विराट' संवेदना प्रकाशन अलिगढ, 1996 पृ. 11
14. मिट्टी मेरे देश की (गीत–संग्रह) कवि 'विराट', प्रगती प्रकाशन, आगरा, 1995, पृ. 112
15. 'स्वर के सोपान' (गीत–संग्रह) चंद्रसेन 'विराट'साहित्य भारती प्रकाशन मुंबई 1996 पृ. 06
16. 'मिट्टी मेरे देश की' (गीत–संग्रह) कवि 'विराट', प्रगती प्रकाशन, आगरा, 1995 पृ. 12

'मिट्टी मेरे देश की', प्रगती प्रकाशन, आगरा, 1995, फ्लैपसे ले. रामगोपाल परदेशी.

Please cite this Article as : ***शौकतअली अजमुद्दीन सय्यदे , कवि चंद्रसेन 'विराट' के ग़ज़ल–गीत में राष्ट्रीय भावना*** **: Golden Research Thoughts (March ; 2012)**